विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 13-04-2021

वर्ग पंचम शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

व्यंजन

स्वरा :- येषां वर्णानाम् उच्चारणं स्वतन्त्रतया भवति थे स्वरा: कथ्यते।

स्वर की परिभाषा - जो स्वयं अपनी सामर्थ्य से स्वयं बोले जाने वाले को स्वर कहते हैं।

स्वर के तीन भेद होते हैं

ह्रस्व स्वर (ह्रस्व स्वरा☺

दीर्घ स्वर (दीर्घ स्वरा☺

मिश्रित स्वर

हस्व - (एते एकमात्राकालेन उच्चार्यामाणा) ह्स्व स्वर वह है जो कम समय में तथा ऊँचे स्वर में बोला जाता है। ये पाँच होते हैं।

जैसे-अ, इ, उ, ऋ, ऌ

क् + अ = क

क् + आ = का

क् + इ = कि

क् + उ = कु

क् + ऋ = कृ

ल् + ऋ = लृ

दीर्घ - (एतेद्विमात्राकालेन उच्चार्यामाणा) जिस स्वर में ऊँचा स्वर और लम्बा समय लगता है, उसे दीर्घ स्वर कहते हैं

आ, ई, ऊ, ॠ = कॄ

मिश्रित स्वर - जिन स्वरों में ह्रस्व और दीर्घ का समय व स्वर लगता है। इसे सन्धि स्वर भी कहा जाता है।

अ + इ = ए

अ + उ = ओ

क् + ओ = को

क + ओ = औ

क् + ए = के

क् + ओ = को

क् + औ = कौ

क + ऐ = कै

अं को अनुस्वार कहते हैं

अः को विसर्ग कहा जाता है।

अनुस्वार (•) और विसर्ग (☺ का प्रयोग स्वर के अन्त में किया जाता है

जैसे

क + अं = कं

क + अ: = कः के रूप में लिखा जाता है।

व्यञ्जन-(येषां वर्णानाम् उच्चारणं स्वरेण सहाय्येन भवति ते व्यञ्जनानि कथ्यन्ते।) जो स्वरों की सहायता से बोले जाते हैं, उसे व्यञ्जन कहते हैं।

जैसे (क् + अ = क)

व्यंजन तीन प्रकार के होते हैं

स्पर्श व्यंजन

अन्त:स्थ व्यंजन

ऊष्म व्यंजन

स्पर्श व्यंजन - जिन वर्णों के उच्चारण में हमारी जिह्वा, कण्ठ-तालु, मर्धा आदि स्वर तन्त्रियों का स्पर्श करती है।

(पञ्चवर्गानां पञ्चविंशति व्यञ्जनानि वर्गीय व्यञ्जनानि कथ्यन्ते।

स्पर्श व्यंजन की संख्या 25 होती हैं